अध्ययन सामग्री
बी.ए. (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्नपत्र - षष्ठ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
वी.कुं.सिं.वि० , आरा

09.07.20

अव्ययीभाव समास

रूपसिद्धि

1) सहरि — लौकिक विग्रह - हरेः सह (सादृश्यम्)
अलौकिक विग्रह - हरि ङस् सह

'हरेः सादृश्यम्' इस लौकिक विग्रह में हरि ङस् तथा सादृश्य अर्थक 'सह' इस अव्यय का 'अव्ययं विभक्ति०' इस सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (ङस्) का लोप

हरि सह

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'सह' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जनसंज्ञक 'सह' का पूर्व प्रयोग

सह हरि

'अव्ययीभावे चाकाले' से 'सह' को 'स' आदेश

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' से 'सु' विभक्ति

स हरि सु

'अव्ययीभावश्च' से नपुंसक संज्ञा होने पर

'स्वमोर्नपुंसकात्' से 'सु' का लोप होने पर — 'सहरि' प्रयोग सिद्ध होता है।

२) अनुज्येष्ठम् — लौकिक विग्रह - ज्येष्ठस्य अनु (आनुपूर्वेण)
अलौकिक विग्रह - ज्येष्ठ ङस् अनु

'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से अनुक्रम अर्थ में वर्तमान 'अनु' अव्यय का 'ज्येष्ठस्य' सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास,
'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (ङस्) का लोप
ज्येष्ठ अनु
'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अनु' की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञक 'अनु' का पूर्व प्रयोग
अनु ज्येष्ठ
'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजस०' सूत्र से 'सु' विभक्ति
अनु ज्येष्ठ सु
'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्यय संज्ञा
'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप प्राप्त था. किन्तु 'नाव्ययीभावादतो-ऽमत्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' को 'अम्' आदेश
अनु ज्येष्ठ अम्
'अमि पूर्वः' से 'अम्' के 'अ' को पूर्व रूप होकर
अनुज्येष्ठम् प्रयोग सिद्ध होता है।

सूत्र — अव्ययीभावे चाकाले

वृत्ति — सहस्य सः स्यादव्ययीभावे न तु काले।
सूत्र का शब्दार्थ है — (च) और (अव्ययीभावे) अव्ययीभाव में (अकाले) अकालवाची परे होने पर।
किन्तु सूत्र का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'सहस्य सः संज्ञायाम्' से 'सहस्य' और 'सः' की अनुवृत्ति होती है।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा — यदि कालवाचक उत्तरपद

न हो, तो अव्ययीभाव समास में 'सह' के स्थान पर 'स' आदेश होता है।

उदाहरण के लिए – अव्ययीभाव समास में 'सह हरि' में उत्तरपद 'हरि' कालवाचक नहीं है, अतः प्रकृत सूत्र से 'सह' के स्थान पर 'स' आदेश होता है।

सहरि

रूपसिद्धिः –

3) सचक्रम् – लौकिक विग्रह – 'चक्रेण युगपत्'
अलौकिक विग्रह – चक्र टा सह

'चक्रेण युगपत्' इस विग्रह में 'चक्र टा' तथा 'सह' का 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (टा) का लोप

चक्र सह

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'सह' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जन संज्ञक 'सह' का पूर्व प्रयोग

सह चक्र

'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से 'सह' को 'स' आदेश

स चक्र

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजस०' से 'सु' विभक्ति

स चक्र सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा

'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप प्राप्त था, किन्तु इसका निषेधक

'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' का 'अम्' आदेश – स चक्र अम्

'अमि पूर्वः' से 'अम्' के 'अ' को पूर्व रूप होकर सचक्रम् प्रयोग सिद्ध होता है।

4) साग्नि — लौकिक विग्रह — अग्निग्रन्थपर्यन्तम्
अलौकिक विग्रह — अग्नि अम् सह

'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से अन्त अर्थ में वर्तमान 'सह' अव्यय का सुबन्त 'अग्निम्' के साथ समास
'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (अम्) का लोप

अग्नि सह

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'सह' की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जन संज्ञक 'सह' का पूर्व प्रयोग

सह अग्नि

'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से 'सह' को 'स' आदेश

स अग्नि

'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से सवर्ण दीर्घ

साग्नि

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजस०' से 'सु' विभक्ति

साग्नि सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा
'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप होकर

साग्नि प्रयोग सिद्ध होता है।